Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H.D. Jain College, Ara.

M.A. Sem-III
CC-13, Unit-II

Topic - असहयोग आंदोलन
(Non Cooperation movement.)

→ अंग्रेजी हुकुमत के अत्याचारों के खिलाफ

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने असयोग आंदोलन की शुरुआत की थी। असहयोग आंदोलन का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी शासन के खिलाफ भारतीय जनता को एकजुट करना था। इस आंदोलन के साथ राष्ट्रवादी भावनाएँ देश के कोने-कोने में पहुँच गई, और इस आंदोलन से देश के हरेक वर्ग के लोग जैसे — कारीगर, छात्र, किसान, शहरी गरीब महिलायें, व्यापारी आदि शामिल हो गए।

खिलाफत के प्रश्न पर 1920 ई० में कांग्रेस के एक विशेष अधिवेशन में गांधी ने बहिष्कार और असहयोग की नीति का एलान किया। खिलाफत कमिटी ने 1 अगस्त, 1920 को आंदोलन प्रारंभ कर दिया। गांधी ने "कैसरे-हिंद की उपाधि सरकार को लौटा दी। दिसम्बर 1920 के नागपुर कांग्रेस अधिवेशन ने गाँधी के असहयोग आंदोलन के प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी।

डॉ० एम.एल जैन के अनुसार असहयोग आंदोलन के दो पक्ष थे — "रचनात्मक एवं विध्वंसात्मक"। पहले वर्ग में स्वदेशी को प्रोत्साहन देने, असहयोग आंदोलन के लिए "तिलक कोष" में एक करोड़ रुपये की राशि एकत्र करने, "स्वयं सेवकों का दल तैयार करने, चरखा एवं कताई-बुनाई का प्रचार करने, राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित करने, हिन्दू-मुस्लिम एकता बढ़ाने, अस्पृश्यता का निवारण करने इत्यादि महत्वपूर्ण कार्यों को रखा गया।

→

→ निर्ध्वंसात्मक कार्यों में सरकारी उपाधियों एवं पदों का त्याग, स्थानीय संस्थाओं से त्याग-पत्र, सरकारी दरबारों, उत्सवों, समारोहों का बहिष्कार, सरकारी शिक्षण संस्थाओं एवं अदालतों का बहिष्कार, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने एवं मेसोपोटामिया युद्ध में भरती होने से इनकार करने को कहा गया।

1920 ई० में होने वाले चुनावों के बायकॉट की योजना भी बनाई गई। आवश्यकता पड़ने पर कर नहीं देने का भी निश्चय किया गया। इस प्रकार नागपुर कांग्रेस अधिवेशन ने कांग्रेस के रूप में परिवर्तन लाकर उसे 'भारतीय जनता की' कांग्रेस' बना दिया।

गाँधी जी के नेतृत्व में उनकी देखा-देखी अनेक प्रभावशाली नेता इस आंदोलन में शामिल हुए। कविवर रविन्द्रनाथ ठाकुर सहित अनेक व्यक्तियों ने सरकारी उपाधियाँ लौटा दी। मोतीलाल नेहरू, चितरंजन दास, राजेन्द्र प्रसाद, जैसे प्रसिद्ध वकीलों ने वकालत छोड़ दिया। हजारों छात्रों ने स्कूल-कॉलेजों से अपना नाता तोड़ लिया। विदेशी-वस्तुओं का बहिष्कार हुआ एवं विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई, घर-घर में चरखा की ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। अनेक राष्ट्रीय विद्यालय जैसे- काशी विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ, महाराष्ट्र विद्यापीठ, जामिया मिलिया विश्वविद्यालय इत्यादि की स्थापना हुई। लाखों की संख्या में स्वयं सेवक तैयार हुए और शीघ्र ही तिलक कोष में वांछित राशि जमा हो गई। जगह-जगह प्रदर्शन और हड़ताल हुए।

—